

## 1 अध्याय: परिचय

## अध्याय 1: परिचय

---

### 1.1 प्रस्तावना

खेलकूद बचपन से ही हमें किसी न किसी तरह की शारीरिक गतिविधि में शामिल होना सिखाया जाता है महात्मा गांधी के अनुसार, शिक्षा मन, शरीर और आत्मा के सर्वांगीण को एकत्र करने की प्रक्रिया है। मन और शरीर पर यह जोर बच्चों की शिक्षा में शारीरिक और मानसिक गतिविधियों के समावेश की आवश्यकता को इंगित करता है। यह दृष्टिकोण इस कहावत में भी परिलक्षित होता है कि 'स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मन निवास करता है।' वर्तमान समय के शिक्षाविद भी बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए शिक्षा की आवश्यकता पर जोर देते हैं। कई शैक्षिक दर्शनों ने इस दृष्टिकोण को महत्व दिया है।

एलेन रसेल कहते हैं, "स्कूल में पढ़ाए जाने वाले सभी विषयों में, शारीरिक शिक्षा ही एकमात्र विषय है, जिसकी सामग्री की प्रकृति के कारण, इसका प्रभाव किसी व्यक्ति के पूरे जीवन के हर चरण पर पड़ सकता है।"

फ्रांसीसी निबंधकार मिशेल दे मांजते ने लिखा: "मैं चाहूंगा कि उसके बाहरी व्यवहार, उसके अंगों की स्थिति, और उसके मन का विकास एक साथ हो। यह न तो केवल आत्मा है और न ही केवल शरीर, जिसे हम शिक्षित कर रहे हैं; यह मनुष्य है, और हम इसे दो भागों में नहीं बांटना चाहिए।"

जॉन लॉक ने अपने निबंध 'ह्यूमन अंडर स्टैंडिंग' में लिखा: "शरीर को शक्ति और जीवंतता में बनाए रखो ताकि वह मन के आदेशों का पालन कर सके और उन्हें क्रियान्वित कर सके। एक स्वस्थ मन एक स्वस्थ शरीर में निवास करता है, यह दुनिया में एक सुखी स्थिति का संक्षिप्त लेकिन पूर्ण वर्णन है; जिसके पास ये दोनों हैं, उसे और अधिक कुछ भी चाहने की आवश्यकता नहीं है। जिसका मन समझदारी से निर्देशित नहीं होगा, वह कभी सही रास्ते पर नहीं चलेगा; और जिसका शरीर कमजोर और अशक्त होगा, वह इसमें आगे बढ़ने में सक्षम नहीं होगा।"

रूसो ने अपनी पुस्तक 'एमिल' में यह दृष्टिकोण व्यक्त किया: "आत्मा का पालन करने के लिए शरीर को मजबूत होना आवश्यक है। एक अच्छा सेवक मजबूत होना चाहिए, शरीर जितना कमजोर होगा, उतनी ही अधिक मांग करेगा; जितना मजबूत होगा, उतना ही बेहतर आत्मा पालन करेगा। यदि आप अपने शिष्य की बुद्धिमत्ता को विकसित करना चाहते हैं, तो उसके अंगों, इंद्रियों और उपकरणों को प्रशिक्षित

करें, जो उसकी बुद्धिमत्ता के उपकरण हैं। और इन उपकरणों का अधिकतम लाभ प्राप्त करने के लिए यह आवश्यक है कि शरीर, जो इन्हें प्रदान करता है, मजबूत और स्वस्थ हो।"

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि मन का शिक्षण अकेले नहीं चल सकता, इसे शरीर के शिक्षण के साथ चलना होगा। औपचारिक शिक्षा में शारीरिक शिक्षा का महत्व शरीर के शिक्षण से संबंधित है, जो बच्चों के समग्र विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। खेलकूद और शारीरिक गतिविधियाँ न केवल शारीरिक क्षमता को बढ़ावा देती हैं, बल्कि मानसिक क्षमता, अनुशासन, टीम वर्क और नेतृत्व कौशल को भी विकसित करती हैं। इसलिए, शारीरिक शिक्षा को शैक्षिक पाठ्यक्रम का अनिवार्य हिस्सा बनाना आवश्यक है, ताकि बच्चे न केवल अकादमिक रूप से बल्कि शारीरिक और मानसिक रूप से भी सक्षम हो सकें।

## **1.2 अध्ययन की पृष्ठभूमि**

बचपन से ही हमें किसी न किसी तरह की शारीरिक गतिविधि में शामिल होना सिखाया जाता है, चाहे वह अपने दोस्तों के साथ खेलना हो, दौड़ना हो या किसी खेल टीम में शामिल होना हो। खेल और शिक्षा दोनों ही हमारे जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। खेल न केवल मजेदार होते हैं, बल्कि वे शिक्षा में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

खेल, छात्रों को टीम वर्क, नेतृत्व, जवाबदेही और धैर्य जैसे जीवन कौशल सिखाते हैं। वे आत्मविश्वास बढ़ाने, आत्म-सम्मान में सुधार करने, सामाजिक कौशल सिखाने और अपने पन की भावना प्रदान करने में भी मदद करते हैं। खेलकूद गतिविधियाँ बच्चों के शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य को भी बेहतर बनाती हैं, जिससे वे अधिक सक्रिय और ऊर्जावान रहते हैं।

शारीरिक शिक्षा का समावेश बच्चों के शैक्षिक अनुभव को समृद्ध करता है। यह उन्हें तनाव प्रबंधन, लक्ष्य निर्धारण और समय प्रबंधन जैसी महत्वपूर्ण क्षमताओं को विकसित करने में मदद करता है। इसके अलावा, नियमित शारीरिक गतिविधियों से बच्चों का ध्यान और एकाग्रता बढ़ती है, जिससे उनकी शैक्षणिक उपलब्धियाँ भी प्रभावित होती हैं।

अध्ययन का उद्देश्य इन बिंदुओं को ध्यान में रखते हुए, खेलकूद सुविधाओं की गुणवत्ता और मात्रा का मूल्यांकन करना है, विशेष रूप से सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के सन्दर्भ में। यह अध्ययन यह समझने

का प्रयास करेगा कि विभिन्न प्रकार के विद्यालयों में खेलकूद सुविधाओं का किस प्रकार का वितरण है और माध्यमिक विद्यालयों में खेलकूद संचालन यह छात्रों के समग्र विकास को कैसे प्रभावित करता है।

### **1.3 विद्यार्थी जीवन में खेलकूद का महत्व**

खेलकूद और खेलकूद बच्चों को सक्रिय और स्वस्थ रखने का एक बेहतरीन तरीका है। शारीरिक गतिविधि संज्ञानात्मक और रचनात्मक कार्यों को बढ़ाने में भी सहायक है, जो बच्चों को स्कूल में बेहतर प्रदर्शन करने में मदद कर सकती है (Fletcher et al., 2018)। जो छात्र नियमित खेलों में भाग लेते हैं, उनमें आत्मविश्वास अधिक होता है और वे बेहतर सामाजिक संपर्क रखते हैं। उनका जीवन के प्रति दृष्टिकोण भी अधिक सकारात्मक होता है और उनमें सामाजिक बुराइयों का शिकार होने की संभावना कम रहती है (Brown et al., 2017)।

### **1.4 स्कूली शिक्षा में खेलों का महत्व**

शारीरिक शिक्षा, खेलकूद, खेल और खेल स्पर्धा के सिद्धांत

#### **1.4.1 शारीरिक शिक्षा की अवधारणा:**

प्राचीन और बुनियादी: शारीरिक शिक्षा का इतिहास प्राचीन है और यह शिक्षा की मूलभूत अवधारणा है। प्रारंभिक शारीरिक शिक्षक माता-पिता होते थे, जो बच्चों को उनके अंगों का उपयोग करना सिखाते थे।  
**व्यापकता:** शारीरिक शिक्षा केवल शारीरिक गतिविधियों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह शारीरिक, मानसिक, सामाजिक और भावनात्मक विकास को भी शामिल करती है।

#### **1.4.2 परिभाषाएं और सिद्धांत:**

**विलियम (1994):** “मनुष्य की शारीरिक गतिविधियों का उपयोग, जो क्रिया के रूप में चुनी जाती है और परिणामों के अनुसार संचालित होती है।”

**वोगामर और अन्य (1979):** “एक प्रक्रिया जिसके माध्यम से क्रियात्मक परिवर्तन शारीरिक अनुभवों के माध्यम से लाए जाते हैं।”

#### **1.4.3 शारीरिक शिक्षा के सिद्धांत:**

स्वास्थ्य, फिटनेस, प्रदर्शन और मनोरंजन।

#### **1.4.4 खेल, खेलकूद और खेल स्पर्धा के बीच अंतर:**

**सिंगर (1976):** खेल गतिविधियाँ समय, स्थान और क्षेत्र के संगठन पर सहमत होती हैं।

**कोकिल (1978):** खेल एक संस्थागत प्रतिस्पर्धात्मक गतिविधि है।

**सिकंदर (1976) द्वारा खेल स्पर्धा:** एक आनंददायक अनुभव जिसमें कोई मूर्त परिणाम नहीं होता।

#### **1.4.5 खेलकूद और खेलों का महत्व:**

जीवन कौशल, स्वास्थ्य, मानसिक विकास, आत्मविश्वास, सामाजिक कौशल।

#### **1.4.6 शिक्षा में खेलों का उपयोग:**

आनंद और प्रतिस्पर्धा: खेल शिक्षकों को खेलों के मजे और प्रभावी प्रतिस्पर्धात्मक का उपयोग करने के लिए प्रशिक्षित किया जाता है (Miller & Roberts, 2021)।

### **1.5 शिक्षा में खेलकूद का महत्व**

शिक्षा में खेलकूद का महत्व शिक्षा के सभी पहलुओं को समग्र रूप से सशक्त बनाने में निहित है। खेलकूद केवल शारीरिक स्वास्थ्य के लिए ही नहीं, बल्कि मानसिक और सामाजिक विकास के लिए भी अत्यंत खेल-कूद बचपन से ही हमें किसी न किसी तरह की शारीरिक गतिविधि में शामिल होना सिखाया जाता है, चाहे वह अपने दोस्तों के साथ खेलना हो, दौड़ना हो या किसी खेल टीम में शामिल होना हो। खेलकूद और शिक्षा दोनों ही हमारे जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। अतः हमारे शोध में यह पाया गया कि माध्यमिक विद्यालय में खेलकूद सुविधा की ओर सरकार प्रशासन ध्यान देना चाहिए। जिससे हमारे विद्यालय क्षेत्र की सभी स्कूलों के प्रति ध्यान खेल संचालन की समस्या आ रही उसे निराकरण किया जा सके तथा बच्चों के भविष्य में आने वाली रुकावट में समाधान हो सके तथा मनोबल विद्यालय में बच्चों का रुचि प्राप्त हो सके आदि महत्वपूर्ण है। शारीरिक स्वास्थ्य: मोटापा, बीमारियों से बचाव, सहनशक्ति, लचीलापन। मानसिक दृष्टिकोण: निर्णय लेना, समस्या समाधान, आत्म-संयम, अध्ययन में ध्यान। सामाजिक दृष्टिकोण: टीम वर्क, नेतृत्व, संवाद कौशल, सहयोग। व्यक्तिगत विकास: आत्म-संवर्धन, आत्म-विश्वास, प्रेरणा, धैर्य। इसलिए, शिक्षा में खेलकूद को एक अनिवार्य घटक के रूप में मान्यता दी जानी चाहिए।

### **1.6 खेलकूद की सुविधाओं तथा संचालन में आने वाली कठिनाईयाँ**

- **उपयुक्त सुविधाएँ और इंफ्रास्ट्रक्चर:** मैदान, उपकरण, कोर्ट।
- **सुरक्षा और देखरेख:** नियमित निरीक्षण, प्राथमिक चिकित्सा।
- **प्रशिक्षण और मार्गदर्शन:** प्रशिक्षित कोच, नेतृत्व विकास।
- **समावेशिता:** विशेष जरूरतों वाले छात्रों के लिए अनुकूलन।

- **मनोवैज्ञानिक और सामाजिक लाभ:** आत्म-विश्वास, टीम भावना, मनोबल।
- **सामुदायिक भागीदारी:** स्थानीय खेल संगठनों से सहयोग।

## 1.7 खेलों से मिलने वाले लाभ

- बीमारियों से दूर और फिट रहने में सहायता।
- शारीरिक विकास में सहायता।
- मानसिक तनाव से मुक्ति।
- आत्म-विश्वास में वृद्धि।
- धैर्य और सहनशीलता का विकास।
- टीम के साथ काम करने की क्षमता।
- समय की पाबंदी और अनुशासन की भावना।
- उत्साह और नई ऊर्जा प्रदान करते हैं।
- चुस्ती-फुर्ती में वृद्धि।
- स्वस्थ राष्ट्र के निर्माण में योगदान।

## 1.8 भारत में शारीरिक शिक्षा का विकास

### 1.8.1 स्वतंत्रता पूर्वकाल

2500 ईसा पूर्व के शुरुआती दौर में, मोहन जोदाड़ो की पुरातात्विक खुदाई में एक उच्च विकसित सभ्यता का पता चला है, जो अब पाकिस्तान के सिंध के लचकाना जिले में स्थित है। इस शहर में पक्की ईंटों के स्नान घर, एक खुले चतुर्भुज में एक तैराकी स्नानागार जिसमें दोनों तरफ सीढ़ियाँ थीं, उन लोगों के स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता के बारे में बताती हैं। लेकिन मार्शल (1931) के अनुसार, यह ज्ञात नहीं है कि उन लोगों ने कौन से खेल और खेल खेले। इस काल को प्राचीन वैदिक काल कहा गया है। इस काल के बाद वैदिक काल आया, जिसमें आर्यों ने मध्य एशिया से इस देश में प्रवेश किया। उस समय के जीवन का विस्तृत वर्णन चार वेदों में उपलब्ध है और इसमें उनके द्वारा खेले जाने वाले खेल और खेलों के बारे में विस्तार से बताया गया है।

महाकाव्य काल में रामायण और महाभारत बच्चों को दी जाने वाली शारीरिक प्रशिक्षण की जानकारी देते हैं। विभिन्न प्रकार के हथियारों का भी वर्णन किया गया है। इन गतिविधियों के साथ-साथ कुश्ती, तैराकी और नृत्य जैसी गतिविधियाँ भी मौजूद थीं। बौद्ध काल के दौरान यद्यपि अहिंसा पर जोर था, खेल और खेल पूरी तरह से उपेक्षित नहीं थे। लेकिन जब मौर्य ने देश का नियंत्रण संभाला, तब सैनिकों के प्रशिक्षण और शारीरिक प्रशिक्षण की गतिविधियों को महत्व मिला। मध्यकाल में देश के उत्तर-पश्चिम भाग से आक्रमण हुए। ये आक्रमणकारी बाद में भारत में बस गए और अपने साम्राज्य स्थापित किए। इस काल में शारीरिक शिक्षा और खेलों का महत्व बना रहा। मध्यकाल के बाद देश में ब्रिटिश शासन आया। 'कंपनी शासन' के अंत के बाद, भारत ब्रिटिश राज की एक विदेशी उपनिवेश बन गया। संभवतः यह वह समय था जब शारीरिक शिक्षा की आधुनिक अवधारणा बढ़ने लगी। 1882 में पहली बार शिक्षा आयोग ने स्कूल शिक्षा कार्यक्रम में खेलों के समावेश की बात की। मार्शल (1931) में वाई.एम.सी.ए कॉलेज ऑफ फिजिकल एजुकेशन और लखनऊ में क्रिश्चियन कॉलेज ऑफ फिजिकल एजुकेशन और लाहौर में कॉलेज ऑफ फिजिकल एजुकेशन 1940 में शुरू किए गए। ये सभी संस्थान शारीरिक शिक्षा के शिक्षकों के प्रशिक्षण में लगे हुए थे। इन शिक्षकों ने देश के सभी हिस्सों में स्थित स्कूलों और कॉलेजों में खेलों और खेलों का आयोजन किया। 1946 में अखिल भारतीय 'शारीरिक शिक्षा सम्मेलन' आयोजित किया गया और 'राष्ट्रीय शारीरिक शिक्षा और अनुसंधान संघ' का गठन किया गया।

### 1.8.2 स्वतंत्रता के बाद

स्वतंत्रता के बाद खेलों और शारीरिक शिक्षा का विकास (1947 के बाद) 15 अगस्त 1947 के बाद खेलों और शारीरिक शिक्षा के क्षेत्र में विकास की गति तेज हो गई। डॉ. एस. राधाकृष्णन की अध्यक्षता में 1948-49 के विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग ने विश्वविद्यालयों और कॉलेजों में एक मजबूत शारीरिक शिक्षा कार्यक्रम की सिफारिश की। आयोग ने इस विचार को बल दिया कि "एक स्वस्थ मन एक स्वस्थ शरीर में निवास करता है," लेकिन यह भी स्वीकार किया कि छात्रों और अधिकारियों में रुचि की कमी, प्रशिक्षित कर्मचारियों की कमी, खेल के मैदानों और उपकरणों की कमी, खेलकूद बजट का अभाव, संगठन की अनुपस्थिति, और अन्य समस्याएं थीं।

1952-53 के माध्यमिक शिक्षा आयोग की अध्यक्षता डॉ. मुदालियर ने की, जिन्होंने सिफारिश की कि शारीरिक शिक्षा और खेलों को स्कूल में शारीरिक शिक्षा निदेशक की देखरेख में दिया जाना चाहिए।

उन्होंने सुझाव दिया कि सभी शिक्षक शारीरिक शिक्षा की गतिविधियों में सक्रिय रूप से भाग लें और इसे कुल कार्यक्रम का एक जीवंत हिस्सा बनाएं।

1964-66 के शिक्षा आयोग की अध्यक्षता डॉ. डी. एस. कोठारी ने की। आयोग ने जोर दिया कि शारीरिक शिक्षा केवल शारीरिक फिटनेस में नहीं, बल्कि मानसिक सतर्कता, धैर्य, टीम भावना, नेतृत्व, नियमों का पालन, विजय में संयम और हार में संतुलन जैसी गुणों के विकास में भी योगदान देती है। आयोग के अनुसार, शारीरिक शिक्षा की सामग्री में विकासात्मक व्यायाम, लयबद्ध गतिविधियाँ, खेल, आउटिंग व्यायाम और समूह गतिविधियाँ शामिल होनी चाहिए।

1954 में मौलाना आजाद की अध्यक्षता में एक सम्मेलन हुआ, जिसमें 'स्पोर्ट्स काउंसिल ऑफ इंडिया' की स्थापना की सिफारिश की गई। इस परिषद को 1959 में राष्ट्रीय स्तर के संगठनों को मान्यता देने, भारत सरकार को सलाह देने और मान्यता प्राप्त खेल संगठनों को वित्तीय सहायता प्रदान करने की जिम्मेदारियाँ सौंपी गईं।

1957 में लक्ष्मीबाई कॉलेज ऑफ फिजिकल एजुकेशन, ग्वालियर और नेताजी सुभाष राष्ट्रीय खेल संस्थान, पटियाला की स्थापना की गई। 1968 में राष्ट्रीय शिक्षा नीति बनाई गई, जिसमें खेलों और शारीरिक शिक्षा को बड़े पैमाने पर विकसित करने की बात की गई, ताकि औसत छात्र की शारीरिक फिटनेस और खेल भावना में सुधार हो सके।

1984 में राष्ट्रीय खेल नीति की घोषणा की गई, जिसमें स्कूल के पाठ्यक्रम में खेल और शारीरिक शिक्षा को एक नियमित विषय के रूप में शामिल करने की आवश्यकता पर जोर दिया गया। यह जोर 1986 की नई शिक्षा नीति में भी दोहराया गया और 1992 में संशोधित 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति' के 'कार्यक्रम ऑफ एक्शन 1992' में विस्तार से वर्णित किया गया।

1988 में, (NCERT) ने स्कूल में शारीरिक शिक्षा को शैक्षणिक कार्यक्रमों के साथ एकीकृत करने के लिए एक राष्ट्रीय पाठ्यक्रम तैयार किया। इसमें मानसिक और भावनात्मक स्वास्थ्य, देशी पारंपरिक खेलों, और योग की भूमिका को महत्व दिया गया।

अधिक योजनाएं और पहल

2008: 'पंचायत युवा खेल और खेल अभियान' (PYKKA)

2014: 'नेशनल स्पोर्ट्स टैलेंट सर्च स्कीम' (NSTSS)

2018: 'खेलो इंडिया' कार्यक्रम

2019: 'फिट इंडिया मूवमेंट'

2020: 'खेलो इंडिया ऐप'

2012: 'राष्ट्रीय खेल दिवस' का आयोजन – 29 अगस्त

इन पहलों के माध्यम से, भारत में खेल और शारीरिक शिक्षा का विकास तेजी से हो रहा है, और यह सुनिश्चित किया जा रहा है कि युवा पीढ़ी शारीरिक रूप से फिट और मानसिक रूप से सतर्क रहे।

## **1.9 अध्ययन की आवश्यकता**

माध्यमिक विद्यालयों में खेल और खेल प्रशिक्षण की खराब स्थिति एक ऐसा मुद्दा है जो पूरी दुनिया में पाया जाता है। लेकिन अविकसित और विकासशील देशों में स्थितियाँ और भी बदतर हैं। भारत एक विकासशील देश होने के नाते, इस समस्या से जूझ रहा है। इस क्षेत्र में कोई भी सुधार करने से पहले यह जानना महत्वपूर्ण है कि हम कहाँ खड़े हैं? विद्यालयों में शारीरिक शिक्षा प्रदान करने की क्षमता कितनी है? ऐसे कई प्रश्नों के उत्तर तलाशना आवश्यक है। वर्तमान जांच इस दिशा में एक छोटा सा कदम है।

## **1.10 समस्या का कथन**

वर्तमान अध्ययन ऐसे प्रश्नों के उत्तर प्राप्त करने का प्रयास करता है:

- 1) बैढ़न ब्लॉक के माध्यमिक विद्यालयों में खेलकूद सुविधाओं तथा संचालन में आने वाली कठिनाइयों की स्थिति क्या है?
- 2) सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में खेलकूद की सुविधाओं तथा संचालन में आने वाली कठिनाइयों का आकलन,

इन प्रश्नों की जांच निम्नलिखित शीर्षक के अंतर्गत की जाएगी:

***"सिंगरौली के बैढ़न ब्लॉक के माध्यमिक विद्यालयों में खेलकूद सुविधाओं तथा संचालन में आने वाली कठिनाइयों का अध्ययन"***

## **1.11 अध्ययन के उद्देश्य**

अध्ययन के निम्नलिखित उद्देश्य हैं:

सिंगरौली के बैढ़न ब्लॉक के सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में खेलकूद सुविधाओं तथा संचालन में आने वाली कठिनाइयों का अध्ययन एक प्रकार के स्कूलों में सुविधाओं तथा संचालन कठिनाइयों, गुणवत्ता, उपलब्धता और अनुपलब्धता का आकलन किया जा सके।

## **1.12 अध्ययन में प्रयुक्त शब्दों की परिभाषा**

### **1.12.1 खेलकूद**

विद्यालयों में उपलब्ध खेलकूद की सुविधाएं उन सभी संसाधनों और सुविधाओं का सम्मिलित रूप हैं जो खेलकूद गतिविधियों के संचालन के लिए आवश्यक हैं।

माध्यमिक विद्यालय: वे शैक्षणिक संस्थान जो कक्षा 6 से 10 तक की शिक्षा प्रदान करते हैं।

सरकारी विद्यालय: ऐसे विद्यालय जो राज्य या केंद्रीय सरकार द्वारा वित्तपोषित और संचालित होते हैं।

## **1.13 अध्ययन की सीमाएँ**

- i. यह अध्ययन केवल सिंगरौली के बैढ़न ब्लॉक के माध्यमिक विद्यालयों पर केंद्रित होगा। इसमें केवल सरकारी विद्यालय शामिल होंगे, केंद्रीय विद्यालय या विशेष संस्थान नहीं।
- ii. यह अध्ययन केवल वर्तमान खेलकूद सुविधाओं तथा संचालन में आने वाली कठिनाइयों की गुणवत्ता और उपलब्धता प्रतिशत पर केंद्रित होगा।
- iii. अध्ययन सीमित समयावधि में किया जाएगा। केवल प्रश्नावली और प्राथमिक डेटा संग्रहण विधियाँ ही अपनाई जाएंगी।